उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०हि०-पत्र

दिगंत- भाग- 2 गद्य भाग

शीर्षक:- 'सम्पूर्ण क्रान्ति'

लेखक:- जयप्रकाश नारायण

प्रश्न:- जयप्रकाश नारायण के छात्र जीवन और अमेरिका प्रवास का परिचय दें। इस अवधि की कौन-सी बातें आपको प्रभावित करती हैं?

उत्तर:- लोकनायक जयप्रकाश नारायण की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। फिर पटना कॉलेजिएट, पटना में दाखिल हुए। इसके बाद पटना कॉलेज में नामांकन कराया। वे विज्ञान के छात्र थे। असहयोग ~~आन्दो~~ आन्दोलन के दौरान शिक्षा अधूरी छोड़ दी बाद में बिहार विद्यापीठ से आई०एस०सी० की परीक्षा उत्तीर्ण हुए।

जयप्रकाश नारायण जी सम्पन्न अर्थात् धनी परिवार के नहीं थे। उन्होंने स्वामी सत्यदेव का भाषण सुना था अमेरिका के बारे में उन्होंने सुना था कि अमेरिका में मजदूरी करके लड़के पढ़ सकते हैं। आगे पढ़ने की उनकी इच्छा थी। वे 1922ई० में अमेरिका चले गये। उन्होंने अमेरिका के बगानों में काम किया, लोहे के कारखानों में काम किया। जहाँ जानवर काटे जाते थे, उन कारखानों में भी काम किया। तीन-चार विद्यार्थी मिलकर एक साथ रहते थे। साथ खाना बनाते थे। प्रत्येक दिन एक घंटा रेस्त्राँ में, बर्तन धोया करते थे या वेटर का काम करते थे, एक चारपाई पर दो लड़के सोते थे। रविवार को जूते साफ करने का काम करते थे। जब उन्होंने बी०ए० पास कर लिया तो उन्हें वहाँ स्कॉलरशिप मिला। अमेरिका प्रवास में जयप्रकाशनारायण ने कैलीफोर्नियाँ, बर्कले, विलिंकसन आदि कई विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया। उन्होंने मार्क्सवाद और समाजवाद की शिक्षा यहीं ग्रहण की।

जयप्रकाशनारायण जी के अन्दर संघर्ष करने की अद्भुत शक्ति ने मुझे विशेषरूप से प्रभावित किया है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०अ०सं०म०स० वि० सुखहेना, पूर्णियाँ

19/09/20

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

जयद्रथ-वध

कवि- मैथिलीशरण गुप्त - सप्रसंग व्याख्या

" लड़ने लगे सब शूर सैनिक, भीति से कायर भगे,
सानन्द गृद्ध श्रृगाल आदिक घूमने रण में लगे ।।

प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्य पुस्तक जयद्रथ-वध के पंचम् सर्ग से ली गई है। इसके कवि हिन्दी के महान् साहित्यकार, राष्ट्रवादी चिंतक श्री मैथिलीशरण गुप्त जी हैं। इस पद्यांश में पाण्डवों और कौरवों की सेना के बीच भीषण युद्ध का वर्णन हुआ है।

कवि कहता है कि पाण्डवों और कौरवों की सेना के बीच भयंकर युद्ध हो रहा है। दोनों ओर से महाबली आपस में युद्ध कर रहे हैं। जो कायर और डरपोक हैं वे सभी रणभूमि छोड़कर भाग रहे हैं। आज के युद्ध में बड़ी संख्या में वीर शहीद हुए हैं। लाशों का अम्बार लगा हुआ है। रक्त की धारा बह रही है। युद्धभूमि में पड़े हुए शवों को देखकर गिद्ध और गीदड़ काफी प्रसन्न मुद्रा में हैं। क्योंकि आज इन सबों को भी भरकर भोजन प्राप्त होने वाला है। रणभूमि में वैसे पक्षियों और जानवरों की भीड़ लगी हुई है।

वस्तुतः कवि आज के भीषण युद्ध की वीभिषिका का वर्णन किया है। दोनों पक्षों की ओर से बड़ी संख्या में सैनिक हताहत हुए हैं। शवों का विशाल अम्बार लग गया है। कायर सैनिक भयभीत होकर भाग गये हैं। महाभारत के युद्ध को देखकर श्रीकृष्ण ने ठीक ही कहा है कि सृष्टि में पुनः ऐसा युद्ध कभी देखने को नहीं मिलेगा।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

19/09/20

सद्गुणों को ग्रहण करें। शक्ति दूसरों को कष्ट पहुँचाने के लिए नहीं बनी है और न ही मिली है वरन् सुख पहुँचाने के लिए मिली है। जहाँ दूसरों की निन्दा हो वहाँ मौन धारण कर लेना चाहिए। आत्मा का अपमान न करते हुए सत्य-पथ का पथिक बनना चाहिए। सत्य में बहुत बड़ी शक्ति छिपी है। अतः सत्य से विचलित नहीं होना चाहिए।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
19.09.20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

'पथिक' खण्डकाव्य

कवि - श्री रामनरेश त्रिपाठी

प्रश्न :- सज्जन व्यक्ति अपनी सद्बुद्धि से किस प्रकार अपने शत्रु को वश में कर लेते हैं? इस सम्बन्ध में कवि का क्या विचार है, उल्लेख करें।

उत्तर :- कवि श्री रामनरेश त्रिपाठी जी ने जीवन के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा है कि सज्जन व्यक्ति अपनी सद्बुद्धि और सद्गुणों से अपने शत्रु को भी वश में कर लेते हैं। क्योंकि सद्बुद्धि और सद्गुण में ऐसी शक्ति निहित है कि वह बिना किसी प्रहार का शत्रुओं का दिल जीत लेती है।

पथिक उपस्थित नवयुवकों को कहता है कि अगर कोई अमूल्य मणिमाला को कौड़ी से बदलना चाहे, तो उससे बढ़कर बड़ा मूर्ख कौन होगा। अर्थात् देश-भक्ति, देश सेवा अमूल्य मणियों की माला है तो इसके प्रति दान स्वरूप कौड़ी के समान यश और प्रसिद्धि आदि की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए। रक्त-पात तो पशु करते हैं। जो रक्त बहाने में विश्वास करते हैं, वे मन ही-मन भय खाते हैं, मन की कायरता से ही रक्त पात मचाकर शान्ति की स्थापना का प्रयास किया जाता है। अपने सत् चरित्र से, अपने सुन्दर स्वभाव से शत्रु को मित्र बना लेने में ही महानता है। दूसरे का रक्त बहाकर कभी भी मित्र नहीं बनाया जा सकता है। जब मनुष्य का सितारा अस्त होने लगता है, तब उसके मन में क्रोध उत्पन्न होता है जो पाशविक प्रवृत्तियों को जन्म देता है। क्रोध के उत्पन्न होते ही दया-सुविचार और न्याय का मार्ग अपवित्र हो जाता है। ऐसे मार्ग को ग्रहण करने वाला पहले अपने आधार को नष्ट कर लेता है।

मनुष्य के जीवन में उसका सबसे बड़ा शत्रु क्रोध है। अगर मनुष्य अपने क्रोध पर विजय प्राप्त कर ले तो वह जगत विजेता भी बन सकता है। मनुष्य को चाहिए कि वह अपने क्रोध, ~~काम~~ आलस्य और छल से बचाये। इससे बचते हुए आत्मिक उत्थान के लिए

शेष आगे -